राजकुमार कुम्भज की कविताएँ

कोमल रंगीन कुछ नहीं

कोमल रंगीन नहीं कुछ
कोमल अँधेरा भी नहीं कुछ
कोमलता से दूर बहुत दूर है हल्कापन
हल्कापन वह नहीं जो भारहीनता
हीनता वह जो भारहीन
इसी आकाश में छुपा है इंद्रधनुष
और चांद हंसिया भी
---xxx---

जादू या चमत्कार नहीं

जादू या चमत्कार नहीं
ऐसे कुछ भी नहीं है कविता
जो एक ही झटके में बदल दे
चांद को रोटी में
और रोटी आ जाए
आ ही जाए हमारे पेट में
हमारी भूख, भूख है करोड़ों-करोड़ों
जादू या चमत्कार नहीं
---xxx---

मौन की व्याख्या नहीं मौन

मौन की व्याख्या नहीं मौन
मौन की व्याख्या करता हूं सिर्फ़ अट्टहास ही
अट्टहास से ही आती है किसी भी सूने में

मौन-तंत्र तोड़ने की वह जागृति
जिस जागृति में बसते हैं, रहते हैं
आदमख़ोर जंगली कुत्ते
माफ़ करें कि शेर अगर आजकल
गुर्राते नहीं हैं तो सिर्फ़ इसलिए
और शायद इसीलिए
कि वे बन गए हैं या बन जाना चाहते हैं
कहीं न कहीं, किसी न किसी जगह के
राज्यपाल अथवा कुलपति
ताकि अधिकतम को सिखाया जा सके मौन
किंतु बता रही है कविता और बार-बार
कि मौन की व्याख्या नहीं मौन
---xxx---

<u>दुःख जगह एक नहीं</u>

दुःख जगह एक नहीं
जाता हूं जहां-जहां, पाता हूं वहां-वहां
कविता में हरे पत्ते की तरह
हरे में जीवनभर जीने की तरह
जीने में जीने के साहस की तरह
टुकड़ा-टुकड़ा आता है जगह-जगह से
फिर टुकड़ा-टुकड़ा जुड़ता जाता है
किसी एक जगह में
किसी एक जगह के लिए
जुड़ता जाता है जीवन में, जीवन की तरह
दुःख जगह एक नहीं
---xxx---

तुमने पहनी पायल

तुमने पहनी पायल
तुमने जो पहनी थी पायल
उस पायल ने पहना था
एक घुंघरू वह भी, वह भी
जो मन मेरा
और घुंघरू-स्वर वह, वही
जो सुनना चाहे देह मेरी
कहता हूं फिर से
और कहता हूं फिर-फिर भी
कि सुनती है देह भी
आवाज़ आत्मा की
और शायद आत्मा की आवाज़ है यही
कि देह में ही रहती है आत्मा
और आत्मा में आत्मा की आवाज़ भी
आवाज़ वह-वही एक जो पुकार जैसी
आवाज़ वह-वही एक जो आवाज़ जैसी
आवाज़ वह-वही एक जो अपनी-सी
तुमने पहनी पायल
---xxx---

खतरे में जीवन

ख़तरे में जीवन
रात, अंधेरा, बारिश और वीरानी-सी वीरानी है
चाकू-छुरियाँ तेज़ करवा लो
आटे में नमक, चाय में चीनी
और देह में प्राणों की तरह

प्राणों में प्रवाह की तरह
प्रवाह में प्रवाह की प्रतिज्ञा की तरह
प्रतिज्ञा में प्रतीक्षा को करते हुए रद्द
किसी एक ज्ञानात्मकता का करते हुए विचार
किसी एक संवेदनात्मकता का करते हुए विचार
किसी एक नृशंसता का करते हुए विचार
संदेह सब
संदेह सब में
संदेह में सब
आग पर रखो तो भागती भाप जैसे
आग पर ही चल राह हूं आजकल
आग पर चलकर ही सीखता हूं चलना
आग पर चला हूं और चलता हूं आग पर
और सीखता हूं चलना कि आख़िर आग का चलना क्या?
चलना वह चलना ही सचमुच है चलना
जो चलना आग का
और जो चलना आग का, आग की तरह
ख़तरे में जीवन
---xxx---

<u>मानुष हूं लेकिन</u>

मानुष हूं लेकिन
नहीं कोमल, नहीं मीठा, नहीं नमकीन
और नहीं वैचारिक-स्वादिष्टता जैसा ही
नंबूद्रिपाद से जब मिला था मैं एक दिन
तो उस दिन मैं, मैं नहीं
नंबूद्रिपाद ही नज़र आ रहे थे चारों तरफ़
सिखाया था उन्होनें ही मुझे भी, मुझे भी

लड़ना, जूझना और अंततः मरना-मारना
मैंने मारे, मेरी कविता ने मारे, गीदड़ कई-कई
पर्याप्त अंदर-बाहर की राजनीति का करते हुए त्याग
किंतु, परंतु, लेकिन और क्योंकि भी
मानुष हूं लेकिन
---xxx---

<u>हो सकता है कि</u>

हो सकता है
ज़रूरी नहीं कि हो ही सकता है
फिर भी और फिर भी
बहुत संभव है कि हो जाए अगर
कहीं न कहीं, व्याकरण-दोष
तो ये दोष कविता का नहीं,
संवेदनाओं का नहीं,
कविता की अभिव्यक्ति का भी नहीं
शब्दों का, भाषा का, बिंबों-प्रतिमानों
और प्रतिमानों की प्रगतिशीलता आदि का भी नहीं
सत्ता से समझौते, सत्ता से साझेदारी का
हो सकता है
---xxx---

<u>हांके में जा रहे थे जो</u>

हांके में जा रहे थे जो
और जो जा रहे थे हांके में
आदमी नहीं, ग़ुलाम थे
गए जो होते आदमी

और जो न होते ग़ुलाम
लड़ते और मांगते आज़ादी
कदापि नहीं जाते हांके में
हांके में जाते नहीं हैं शेर
शेर कब जाते हैं हांके में?
हांके में जाते हैं ग़ुलाम और मवेशी ही
हांके में जा रहे थे जो
और वे जो जा रहे थे हांके में
तो अंततः क्यों?
---xxx---

कविता वहीं है

कविता वहीं है
जहां है पानी और अंधेरे की आवाज़
मैं पानी की आवाज़ सुनता हूं
मैं अंधेरे की आवाज़ सुनता हूं
मैं आग की आवाज़ सुनता हूं
और मैं सुनता हूं वह आवाज़ वह आवाज़
जो नहीं
सिर्फ़ मेरी और जो असहमत
कविता वहीं है
---xxx---

राजकुमार कुम्भज
संपर्क: 331, जवाहरमार्ग, इन्दौर 452002 फ़ोन: 0731-2543380 ईमेल: rajkumarkumbhaj47@gmail.com